CAMBRIDGE
International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **February/March 2026**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages. Any blank pages are indicated.

© Cambridge University Press & Assessment 2026

[Turn over

v1

https://xtremepape.rs/

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * कश्मीर की विलो लकड़ी से बना क्रिकेट का बल्ला आजकल महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में अपना जलवा बिखेर रहा है। कश्मीरी बैट निर्माता कंपनी का कहना है कि उनके बल्लों का प्रयोग पाकिस्तान के साथ खेल रही वेस्टइंडीज़ की महिला टीम तो कर ही रही है, दूसरी कई अंतरराष्ट्रीय टीमें भी करने वाली हैं। कंपनी प्रवक्ता ने कहा कि उनका बल्ला अपने संतुलन, थाप और धमक में दूसरे बल्लों से बेहतर है जो उनके वर्षों के शोध से संभव हुआ है। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: महिलाः * जन्मदिन मुबारक सचिन! माफ़ करना, मेरी पियानो परीक्षा थी। कैसी रही पार्टी?

पुरुषः धन्यवाद प्रिया। तुम्हें छोड़कर सब आए थे। ख़ूब मज़े किए।

महिलाः क्या मिला तुम्हें जन्मदिन पर?

पुरुषः मैं तो नया वीडियो गेम चाहता था। पर मुझे लग रहा था कि मुझे गिटार या साइकिल जैसी कोई चीज़ मिलेगी।

महिलाः तो फिर क्या मिला?

पुरुष: जो मुझे चाहिए था।

महिलाः सच में? तब तो भई खेलने आना पड़ेगा। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 3

FEMALE: * छात्रो, आज हम आपको एक अनोखे महल की सैर पर ले चलेंगे। इसे सुलतान आगा ख़ान ने अकाल के दिनों में पुणे के लोगों को काम देने के लिए बनवाया था। निर्माण के 50 साल बाद इसी महल में भारत छोड़ो आंदोलन चला रहे महात्मा गाँधी और कस्तूरबा गाँधी को बंदी रखा गया। जिसके दौरान कस्तूरबा का निधन हो गया था। आज़ादी के बाद सुलतान ने इसे महात्मा गाँधी के सम्मान में देश को दान कर दिया था। आजकल यह एक राष्ट्रीय स्मारक है। **

[Pause 10 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2026

https://xtremepape.rs/

MALE: संवाद 4

FEMALE: महिलाः * गर्मियों से परेशान हो गई हूँ। छुट्टियों में किसी ठंडी सी जगह जाने का मन है!

पुरुषः सच में। हम भी इस बार समुद्रतट की जगह नेपाल जा रहे हैं हिमालय पर चढ़ाई करने।

महिलाः पर तुम लोग तो जापान जाने वाले थे?

पुरुषः हम नहीं, हमारे पड़ोसी जाने वाले थे। ख़ैर, क्या मैं तुम्हारा कैमरा ले जा सकता हूँ? मेरे वाला उतना अच्छा नहीं है!

महिलाः क्यों नहीं? पर राम! चढ़ाई के लिए अच्छे से जूते लेना मत भूलना!

पुरुषः कभी का ख़रीद चुका! अब तो बैग की तलाश में हूँ। ऑनलाइन मिल जाएगा। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 5

MALE: * योगेश जी, मैं लकी गराज से बोल रहा हूँ। आपकी कार इस हफ़्ते तैयार नहीं हो पाएगी। उसके ब्रेक में कुछ गड़बड़ी है। एक पुर्ज़ा लगाना पड़ेगा जिसे मँगाने में एक-दो दिन लगेंगे। हाँ आपका स्कूटर तैयार है। उसे आप जब चाहें ले जा सकते हैं या कहें तो हम भिजवा भी सकते हैं। एक बात और बतानी थी कि अगले हफ़्ते होली की वजह से सोमवार को गराज बंद रहेगा और अगले दिन ही खुलेगा। आपको और भाभी जी को होली मुबारक! **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 6

MALE: पुरुषः * आजकल क्या पढ़ रही हो सीमा?

महिलाः राजा की अँगूठी। सत्यजित राय की है। बड़ी मज़ेदार है!

पुरुषः क्या? उन्होंने किताबें भी लिखी हैं?

महिलाः अरे! ऐसी-वैसी? जासूसी कहानियों के तो वे उस्ताद हैं और तुम तो जानते हो वह मेरी कमज़ोरी है। तुम बताओ? गेम ही खेलते हो या कुछ पढ़ भी रहे हो?

पुरुष: नहीं। पढ़ रहा हूँ। एक एकदम नई किताब हाथ लगी है। द कमिंग वेव।

महिलाः कोई फ़ैशन की किताब लगती है। पर तुम और फ़ैशन?

पुरुषः नहीं बाबा! कृत्रिम बुद्धि के बारे में है। काफ़ी बिक रही है! **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2026

https://xtremepape.rs/

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

FEMALE: **डॉ भीमराव आम्बेडकर के नारीवादी विचारों का परिचय कराने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।**

यह वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * भारतीय संविधान के निर्माता भीमराव आम्बेडकर के नारीवादी विचारों पर बहुत कम लिखा गया है। शादी से पहले महिलाओं के आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने और आने वाली संतान को लेकर स्त्री-पुरुष के बीच पूरी सहमति की आवश्यकता पर आम्बेडकर के विचार दुनिया भर में उद्धृत किए जाते हैं। लगभग सौ साल पहले के समय और समाज में महिलाओं के ऐसे अधिकारों के बारे में बोलना उनकी असाधारण दूरदृष्टि का परिचय देता है।

जिन दिनों आम्बेडकर मुंबई विधानसभा में विधायक थे, उन दिनों उन्होंने महिला मज़दूरों के लिए ज़्यादा बड़े अधिकारों की बात की थी। अधिक छुट्टियों की वकालत करते हुए उन्होंने महीने के मुश्किल दिनों के लिए ज़्यादा अवकाश देने की बात भी कही थी। इसके अलावा उन्होंने पुरुष मज़दूरों की तरह महिला मज़दूरों को भी बराबर की मज़दूरी देने की माँग को लेकर आंदोलन किया था।

आम्बेडकर ने **1938** में महिलाओं के लिए एक विधेयक पास कराने की कोशिश की, जिसमें सरकारी अनुदान द्वारा परिवार नियोजन का अभियान चलाने की बात थी। हालाँकि उनका यह विधेयक अनैतिकता का ठप्पा लगने के कारण पास नहीं हो पाया था। लेकिन जब आप उनके इस प्रयास को ऐसे विषयों पर कई विकसित देशों में आज भी जारी विवाद के संदर्भ में देखते हैं, तो पाते हैं कि आम्बेडकर एक ऐसे शख़्स थे, जिन्होंने दुनिया भर की महिलाओं के लिए समय से पहले आवाज़ उठाई। उनके हक़ की बात की।

वास्तव में आम्बेडकर भारत के पहले नारीवादी पुरुष थे। मुद्दों के प्रति उनकी समझ और उसे व्यक्त करने का तरीका असाधारण था। इन मुद्दों को उन्होंने उस समय उठाया, जब ये मुद्दे कहीं थे ही नहीं। उन्होंने दलितों का मुद्दा तब उठाया जब सवर्णों को लगता था कि यह स्वतंत्रता संग्राम से ध्यान भटकाने वाला साबित होगा। उन्होंने महिलाओं का मुद्दा तब उठाया जब समाज में महिलाओं के अधिकार पुरुषों के लिए कोई मायने नहीं रखते थे। आम्बेडकर हर मायने में अपने समय से आगे के विचारक थे। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2026

https://xtremepape.rs/

MALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8–15**

FEMALE: **गाँधीवादी विचारक दुर्गादास रथ के साथ पत्रकार मेखला परिहार की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: मेखलाः * दुर्गादास जी! ग्रामीण भारत कार्यक्रम में आपका स्वागत है।

दासः धन्यवाद, मेखला जी।

मेखलाः दुर्गादास जी, आज़ादी के 80 सालों में भारत में बहुत कुछ बदला है। पर जिस तरह के बदलाव गाँवों में आए हैं क्या वे गाँधी जी के सपनों पर खरे उतरते हैं?

दासः बिलकुल नहीं। गाँधी जी चाहते थे कि हर गाँव एक स्वावलंबी प्रजातंत्र होगा, जो अपनी आम ज़रूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहेगा। गाँवों में पंचायतें और ग्रामसभाएँ बनी हैं। उनके चुनाव भी होते हैं और वे स्थानीय फ़ैसले भी लेती हैं। परंतु वे अपनी बुनियादी ज़रूरतों के सामान और सुविधाओं के लिए ज़िला, राज्य और देश पर निर्भर रहती हैं।

मेखलाः तो क्या पंचायती राज का कोई लाभ नहीं हुआ?

दासः राजनीतिक जागरूकता तो बढ़ी है। पर गाँधी जी चाहते थे कि हर गाँव को अपना शासन चलाने और विकास का रास्ता चुनने की छूट होनी चाहिए। गाँव अपने कुटीर उद्योग और कारोबार बढ़ाएँ और ज़रूरत की बुनियादी सुविधाएँ जुटाएँ। यानी स्वावलंबी बनना सीखें। इसीलिए वे बार-बार कहते थे कि भारत अपने शहरों में नहीं गाँवों में बसता है।

मेखलाः पर, क्या उद्योगों के विकास के लिए शहरीकरण ज़रूरी नहीं है?

दासः उद्योग-धंधे गाँवों में क्यों नहीं लग सकते? गाँधी जी भारत की आत्मा को पहचानते थे। उन्होंने दक्षिण अफ़्रीका से लौटते ही कई साल तक गाँवों का दौरा किया और उन्हें समझा था। भारत में गाँव प्राचीन काल से ही प्रशासन और उद्योग-धंधों की धुरी रहे हैं। भारत जितनी धार्मिक और राजनीतिक क्रांतियाँ किसी देश में नहीं हुईं। फिर भी यहाँ गाँवों की व्यवस्था में कभी कोई परिवर्तन नहीं आया। क्योंकि भारत के गाँव छोटे-छोटे गणराज्यों जैसे हैं जो अपनी ज़रूरत की सभी चीज़ों की व्यवस्था कर लेते हैं।

मेखलाः पर क्या देश का ग्राम गणराज्यों में बिखरा रहना आधुनिक राष्ट्र के निर्माण के लिए चुनौती नहीं था?

दासः नहीं। क्योंकि गाँवों का स्वावलंबी सामुदायिक जीवन उनकी राष्ट्र की कल्पना के अनुरूप था। असहयोग आंदोलन के दिनों में वही ज़िले सबसे अधिक सफल रहे थे जहाँ गाँवों में कुछ समय से कताई, बुनाई और ग्रामोत्थान के काम चल रहे थे। इस अनुभव ने गाँधी जी की ग्राम स्वराज की धारणा को और पक्का किया।

मेखलाः फिर गाँधी जी का वह सपना पूरा क्यों नहीं हो पाया?

दासः इसलिए कि हमारे शहर और क़स्बे विदेशी माल के बाज़ार बन गए और विदेशी वस्तुओं को गाँवों में बेच कर उनका शोषण करने लगे। व्यक्ति या देश जब उत्पादक न रहकर केवल उपभोग करने वाला उपभोक्ता बन जाता है तब ग़रीबी की शुरुआत हो जाती है। गाँवों के कुटीर उद्योग-धंधों को बचाने के लिए बनी सरकारी योजनाएँ भी उन्हें नहीं बचा सकीं। शहरों का विकास और ख़ुशहाली गाँवों की बेरोज़गारी का कारण बनता गया। अब गाँवों में कताई और बुनाई से लेकर आटा पीसने, धान कूटने और तेल पेरने जैसे काम

© Cambridge University Press & Assessment 2026

https://xtremepape.rs/

भी मशीनों से हो रहे हैं। इन कामों में लगे मज़दूर-किसान बेरोज़गार हो गए हैं और गाँव की पूरी अर्थव्यवस्था ठप हो गई है।

मेखलाः क्या इस प्रक्रिया को पलटा जा सकता है?

दासः पलटना होगा। ग्राम अर्थव्यवस्था का विकास किए बिना भारत आगे नहीं बढ़ सकता। उसके लिए कुटीर उद्योगों को लौटा कर गाँवों में नए उद्योग-धंधे लगाना, बुनियादी सुविधाएँ बढ़ाना और गाँवों को स्वावलंबी बनाना होगा।

मेखलाः दुर्गादास जी, कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

दासः धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

FEMALE: पर्यटन और पर्यावरण पर दो वक्ताओं की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * पर्यटन के कई लाभ हैं। इससे रोज़गार पैदा होते हैं। विकास को बढ़ावा मिलता है। प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता फैलाने और उनका संरक्षण करने में मदद मिलती है। संस्कृतियों के बीच आपसी समझ के विकास में भी मदद मिलती है। सत्तर के दशक तक पर्यटन को चिमनी रहित स्वच्छ उद्योग माना जाता था। क्योंकि पर्यटन में दूसरे उद्योगों की तरह कल-कारख़ाने लगाने या खानें खोदने जैसी गतिविधियाँ नहीं होतीं जिनसे जलवायु, जंगल और ज़मीन पर प्रदूषण फैलता है।

FEMALE: पर्यटन से प्रदूषण फैलता है। प्राकृतिक संसाधनों की क्षति होती है और जैव-विविधता ख़तरे में पड़ती है। शिमला और मनाली जैसे बहुत से पहाड़ी पर्यटन शहरों से पानी की कमी, पार्किंग की समस्या, कचरे के ढेर, मिट्टी का कटाव और वायु प्रदूषण की शिकायतें मिलती रहती हैं। पहाड़ी झरने और सहायक नदियाँ सूख रही हैं जिनके कारण देश की तमाम बड़ी नदियों में पानी घटकर आधा हो चुका है। क्योंकि वे जिन हरे-भरे जंगलों से निकलती हैं वे सड़कों, भवनों और उद्योगों की बलि चढ़ते जा रहे हैं। पर्यटन का राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और आरक्षित वनों के वन्यजीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। रात्रि में तेज़ गति से चलती गाड़ियों से वन्यजीवों को हानि पहुँचती है और उनके स्वभाव में भी परिवर्तन आते हैं। पर्यटन से वन्य जीवों से बनी वस्तुओं की माँग बढ़ती है जिसे पूरा करने के लिए पशुओं को बड़े पैमाने पर पकड़ा और मारा जाता है।

© Cambridge University Press & Assessment 2026

https://xtremepape.rs/

MALE: पर्यटन पर्यावरण के संरक्षण का साधन भी बन सकता है। स्विट्ज़रलैंड की अर्थव्यवस्था वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता पर ही क़ायम है। उन्होंने विकास को प्रकृति से जोड़ लिया है। नेपाल एवरेस्ट शिखर की चढ़ाई के लिए जाने वाले पर्वतारोहियों से ली जाने वाली राशि का प्रयोग पर्यावरण संरक्षण और हरित निवेश में करता है। हरित निवेश से स्वच्छ और किफ़ायती ऊर्जा की तकनीकों का विकास हो सकता है। होटलों और पर्यटन स्थलों को आर्थिक और तकनीकी सहायता देकर कचरे को रिसाइकल करने और गंदे पानी को साफ़ करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। पर्यटन से स्थानीय माल और सेवाओं की माँग बढ़ती है। लोगों को रोज़गार मिलता है और अर्थव्यवस्था का विकास होता है। इस विकास का प्रयोग पर्यटन स्थलों को और आकर्षक बनाने में किया जा सकता है। इससे पर्यटन को और बढ़ावा मिलता है और एक टिकाऊ विकास-चक्र बन जाता है।

FEMALE: पर्यटन का सही प्रबंधन न करने से पर्यटन क्षेत्र के लिए पर्यावरण और वन्यजीवों के अलावा और भी कई तरह की गंभीर समस्याएँ संभव हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए बड़े पैमाने पर सड़कें, रेलमार्ग, हवाई अड्डे, पुल, होटल और अस्पताल बनाना आवश्यक है। परंतु सुविधाएँ न होने से पर्यटकों की संख्या घट सकती है जिसका असर उनके आने की आशा पर बने होटल, सेवा और स्थानीय माल बनाने वाले उद्योगों पर पड़ेगा। सुरक्षा और निगरानी के कड़े प्रबंध के बिना अपराध, हिंसा और नशीली दवाओं की तस्करी बढ़ सकती है। पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच असमानता बढ़ सकती है। स्थानीय संस्कृति और परंपराओं पर ख़राब असर पड़ सकता है जो स्थानीय लोगों में असंतोष की भावना पैदा कर सकता है।

MALE: असल में पर्यटन एक दुधारी तलवार है। पर्यावरण और सांस्कृतिक धरोहर उसका मूलाधार हैं। यदि उनके संरक्षण को सर्वोपरि मान कर स्थानीय लोगों की भागीदारी से पर्यटन का विकास किया जाए तो पर्यावरण और पर्यटन दोनों को लाभ होता है। यदि दोनों की परवाह किए बिना अनियंत्रित रूप से पर्यटन बढ़ाया जाए तो दोनों को हानि होती है। भूटान, मालदीव्स और मॉरीशस ने पर्यटन से पर्यावरण की रक्षा और आर्थिक उन्नति दोनों को हासिल किया है। नेपाल, भारत, कंबोडिया और बहुत से करेबियाई देशों में वैसा नहीं हो पा रहा है। पर इसमें दोष पर्यटन का नहीं प्रबंधन का है। पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जो आर्थिक असमानता को दूर करने में सहायता करता है और विश्व के सांस्कृतिक सेतु का काम भी करता है। पर्यटक अपने देश से कमाया धन पर्यटन क्षेत्र में जाकर ख़र्च करते हैं और वहाँ से लोगों के जीवन और संस्कृति के बारे में जानकर लौटते हैं। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 4 की इस बातचीत को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**
This is the end of the examination.

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (Cambridge University Press & Assessment) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge International Education is the name of our awarding body and a part of Cambridge University Press & Assessment, which is a department of the University of Cambridge.

© Cambridge University Press & Assessment 2026

https://xtremepape.rs/